Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

2022-23

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

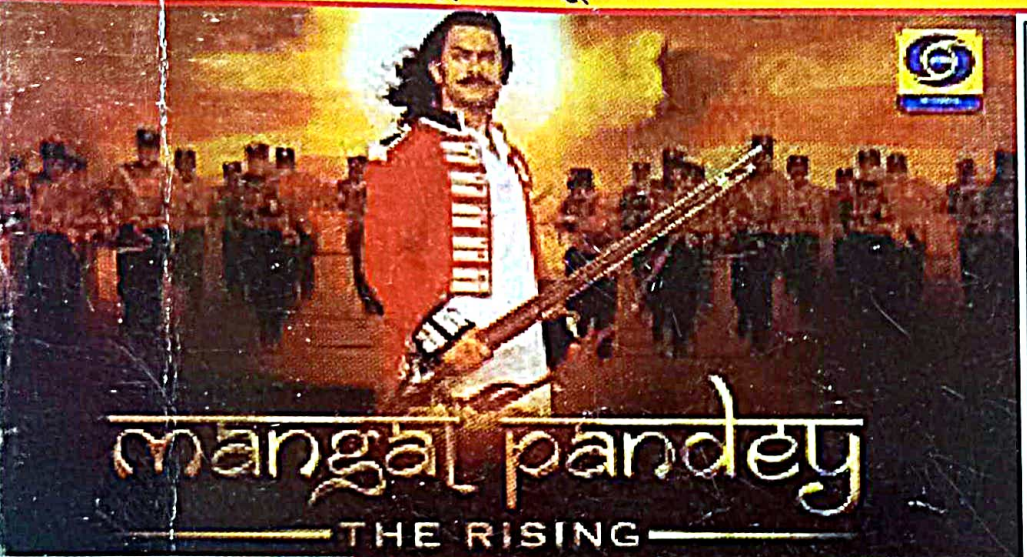

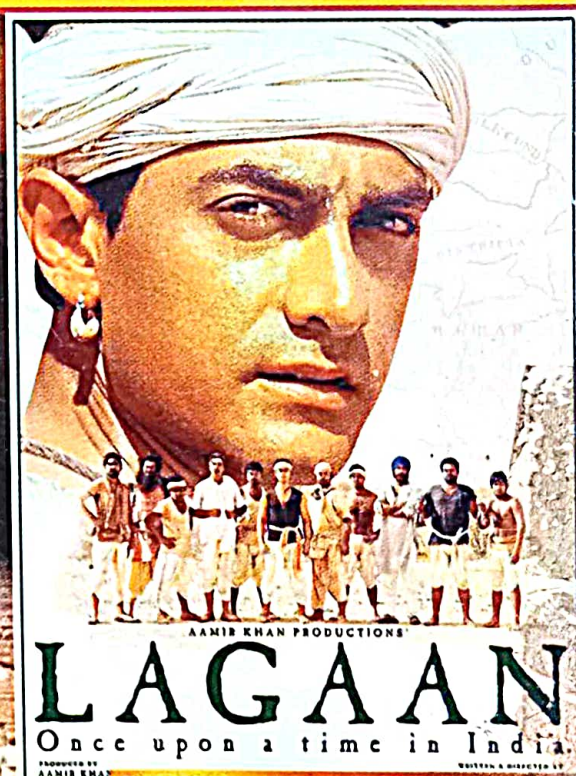

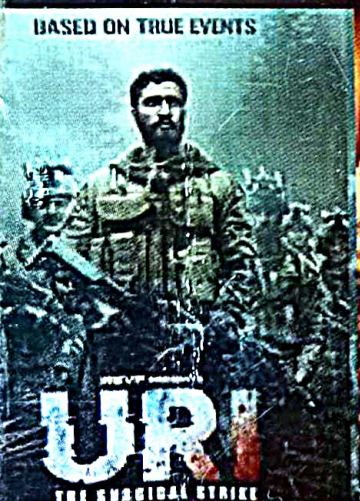

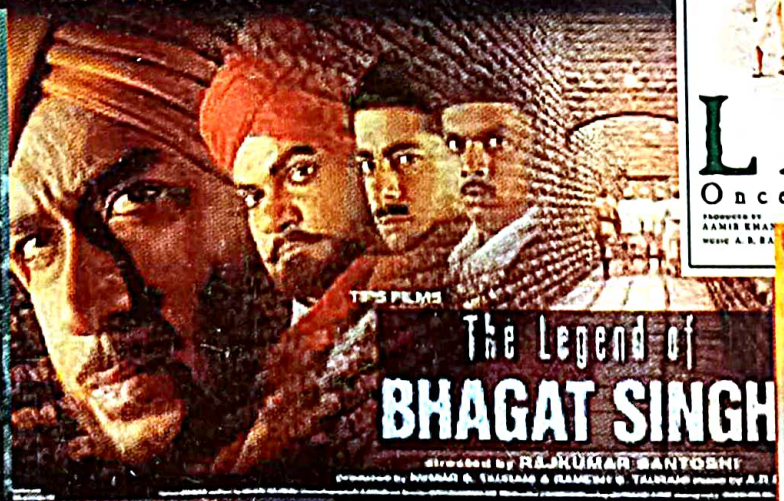

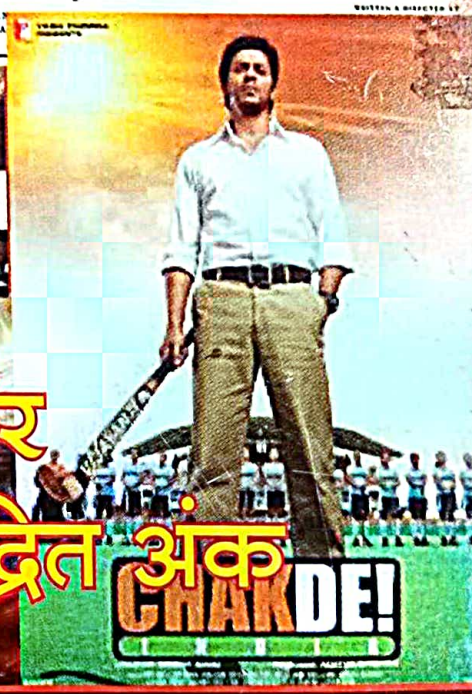

सिनेमा में राष्ट्रीयता और अस्मिता मूलक विमर्श पर केंद्रित अंक

Lt. Dr. Ravindra C. Patil
5 MAH BN NCC
C. Shahu College, Kolhapur

ISSN-2250-2335 Reg. No. MAHHIN/2008/26222

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन
प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर
संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय
संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट
डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी,
असल्फा,
घाटकोपर (प.), मुंबई-400 084.

Email: sameecheen@gmail.com
website-www.http//:
sameecheen.com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)

1) डॉ. राम प्रसाद भट्ट
भारत-विद्या विभाग,
हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, हैम्बर्ग, जर्मनी
2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विवि.,
वाराणसी, (उ. प्र.)
4) डॉ. नरेन्द्र मिश्र
प्रो. हिंदी, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू मैदानगढ़ी,
दिल्ली110068
5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय,
मुंबई
6) प्रो. (डॉ.)अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई
विश्वविद्यालय, मुंबई
7) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सवित्रीबाई फुले पुणे
विद्यापीठ, पुणे
8) प्रो. (डॉ.) शरेशचंद्र चुलकीमठ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक
विश्वविद्यालय, धारवाड़
9) डॉ. अरुणा दुबलिश
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.) मुंबई-400 086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

• वर्ष-16 • अंक 34 • जनवरी-मार्च-2023 • पूर्णांक 71 • मूल्य 100 रुपए
सहयोग : एक प्रति रु. 100/-, वार्षिक रु. 400/-, पंच वार्षिक रु. 2000/-

सीधे समीचीन के खाते में भेजने के लिए : खातेधारक का नाम : **समीचीन** / sameecheen
A/C No. 60330431138, Bank of Maharashtra,
Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai. IFSC : MAHB0000045

(संदर्भ -चक दे इंडिया और गदर : एक प्रेमकथा)-प्रा. अजित दादू फाळके 113-115
23. हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना- निलेश सखाराम डामसे 116-119
24. 21वीं सदी की हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना-डॉ. अशोक मरळे 120-122
25. २१ वीं सदी के हिंदी सिनेमा में राष्ट्रीय भावना-डा. संतोष रायबोले 123-127
26. जयभारत नाटक में राष्ट्रीय भावना-प्रा. जेलित कांबळे 128-131
27. 'लौटे हुए मुसाफिर' में प्रतिपादित राष्ट्रीय भावना
गीतु दास (शोध छात्र), डॉ. जी. शान्ति (शोध निर्देशिका) 132-136
28. डॉ. परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य में राष्ट्रीय चेतना-प्रा. आनंद र. बक्षी 137-139
29. 21वीं सदी के हिंदी बाल साहित्य की कविता में राष्ट्रीय चेतना
डॉ. पंडित बन्ने, डी. लिट् 140-144
30. अज्ञेय के काव्य साहित्य में चित्रित राष्ट्रीय जीवन
प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे 145-151
31. इक्कीसवीं सदी के भारतीय सिनेमा में राष्ट्रीय चेतना
प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई 152-154
32. 21वीं सदी के हिन्दी साहित्य में नारी चेतना-प्रा. डॉ. भारत बा. उपाध्य 155-157
33. 'हम एक हैं' नाटक में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय एकता
प्रा. भिमाशंकर लक्ष्मण गायकवाड 158-161
34. 21 वीं सदी के हिंदी फिल्मी गीतों में राष्ट्रीय भावना-डॉ. जे. ए. पाटील 162-165
35. '21 वीं सदी की हिंदी फिल्मों में राष्ट्रीय भावना'-प्रा. एस. ए. वनिरे 166-169
36. 21वीं सदी में हिंदी सिनेमा और राष्ट्रीय भावना-डॉ. सौदागर साळूंखे 170-172
37. 21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में राष्ट्रीय भावना-डॉ. प्रकाश विठ्ठल शेटे 173-175
38. हिंदी साहित्य और सिनेमा-गौरी त्यागी, शोधार्थी 176-180
39. 21वीं सदी की हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावनाः उत्तरआधुनिकता
बोध के परिप्रेक्ष्य में - डॉ. आर. पी. भोसले 181-185
40. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के 'वतन के तीन सिपाही' नाटक में राष्ट्रीय भावना
लेफ़्टिनेंट डॉ. रविंद्र पाटील 186-189
41. 'कृष्णा सोबती के उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना'-प्रा. व्ही. एच. वाघमारे 190-191
42. मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना
प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे 192-198
43. 21 वीं सदी की हिंदी फिल्मों में राष्ट्रीय भावना-डॉ. मारोती यमुलवाड 199-202
44. 'घुटन भरी जिंदगी' में राष्ट्रीय भावना-डॉ. गोरख निळोबा बनसोडे 203-208
45. नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में राष्ट्रीय भावना
('उन्नीस सौ चवालीस' एवं 'छलांग' कहानी के विशेष संदर्भ में)
नीलेश वसंतराव जाधव (अनुसंधाता) 209-213
46. दलित साहित्य की अवधारणा और चिंतन
अखिलेश जैसल (शोधार्थी), डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी (शोध निर्देशक) 214-215
47. गुजराती साहित्य में नारी चेतना-डॉ. हेतल पी. बारोट 216-218
48. 'दोहरा अभिशाप' में व्यक्त क्रांति चेतना-प्रो. अंजना विजन 219-222
49. मुंबई से सटी येऊर पहाड़ी पर बसी वारली और ठाकुर जनजातियाँ
(आदिवासी जीवन पर केंद्रित आलेख) - डॉ. जयश्री सिंह 223-225

सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के 'वतन के तीन सिपाही' नाटक में राष्ट्रीय भावना

लेफ़्टिनेंट डॉ. रविंद्र पाटील

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना हजारों सालों से देखी जाती है। यह राष्ट्रीयता की विचारधारा निरंतर बहती आयी है। आदिकाल के चारण कवियों ने राष्ट्रीयता से ओतप्रोत अनेक रचनाएँ हिंदी साहित्य को प्रदान की हैं। चारण कवि राजाश्रयित थे। परंतु उनके काव्य में राजा- महाराजाओं का गुणगान एवं पराक्रमपूर्ण कार्य का चित्रण हुआ है। तुलसीकृत 'रामचरितमानस' भी इसके लिए अपवाद नहीं। रीतिकालीन श्रृंगार और विलासिता के दौर में भी राष्ट्रीय चेतना का संदेश देने वाले कवियों की संख्या काफ़ी मात्रा में देखी जा सकती है। भूषण ने छत्रसाल और छत्रपति शिवाजी जैसे महाराजाओं को अपने काव्य का प्रमुख विषय बनाया। आधुनिक काल तक आते-आते साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना अधिक प्रकाशमान हुई। इसमें सभी विधाओं का बोलवाला रहा। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर जैसे अनेक साहित्यकारों का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है।

नाट्य साहित्य अन्य विधाओं के समान राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। हिंदी साहित्य में नाटक विद्या को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस विधा के विकास में साठोत्तरी हिंदी नाटककार एवं नाटकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इन नाटककारों ने ऐतिहासिक, पौराणिक मिथकीय नाटकों के माध्यम से अतीत की बातों को पात्रों के माध्यम से सजीव बनाने का सफल प्रयास किया है जो देश प्रेम की भावना से भरी पड़ी हैं और जो आज की पीढ़ी के लिए भी प्रेरक बनी हुई हैं।

21 वीं सदी का हिंदी नाट्य साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। सुरेश चंद्र शुक्ल हिंदी के ख्यातनाम नाटककार हैं। अपने देश की संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास और महान देश भक्तों की प्रेरणा से प्रेरित होकर सुरेश शुक्ल 'चंद्र' की 'वतन के तीन सिपाही' सामने आया। इस नाटक का प्रथम संस्करण, २०१० में अनंग प्रकाशन दिल्ली से हुआ। राष्ट्रीय जागरण की प्रगतिशील दृष्टि से अनुप्रेरित होकर इतिहास को उभारने और एक निश्चित एवं स्पष्ट रूप ग्रहण करने वाले देश के राष्ट्रीय आंदोलन को दृश्यत्व देते हुए चंद्र के तीनों नाटक जनजागरण का संदेश भी देते हैं। प्रस्तुत नाटक में भूषण 'कलम का सिपाही' जो मुगल सम्राट औरंगजेब की आखों में आँखें डालकर बातें करते हैं। तात्या टोपे तलवार और शक्ति के पुजारी हैं जो १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में आखिरी साँस तक लडते हैं। बाल गंगाधर तिलक के हाथों में जनता के जागरण और विद्रोह की मशाल है। तीनों पात्र अपनी राष्ट्रभक्ति अटूट निष्ठा, कर्तव्यबोध संपन्न निःस्वार्थी, जनसेवी और त्याग की भावना से ओत-प्रोत हैं।

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के नाटकों में इतिहास देशप्रेम, राष्ट्रीयता आदि बातों का चित्रण है। भारत की महान संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक पल, भारत माता पर जान नौछावर करने वाले महान देशभक्तों के प्रति निष्ठा और गौरव की भावना से प्रेरित होकर डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' ने 'वतन के तीन सिपाही' नाटक की रचना की है।

इसमें राष्ट्रीय जागरण की प्रगतिशील दृष्टि दिखाई देती है। इस नाटक के संदर्भ में डॉ. लवकुमार लवलीन लिखते हैं, 'इस संग्रह में डॉ. चंद्र कृत 'भूषण भनत अमर सेनानी' और 'नरकेसरी' जैसे तीन पूर्णाकार नाटक के साथ तात्या टोपे भी संकलित है। रीतिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इन तीन सिपाहियों ने अपनी सीमाओं, शक्तियों और देशभक्ति की उत्कट भावना से जनता को जागृत कर स्वतंत्रता और संगठित होने की प्रेरणा दी है। भूषण कलम का सिपाही है, तात्या टोपे तलवार और शक्ति का पुजारी है। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के हाथों में जनता के जागरण और विद्रोह का मशाल है। तीनों अपनी राष्ट्रभक्ति, अटूट निष्ठा, कर्तव्यबोध संपन्न, निःस्वार्थी जन-सेवी और त्याग-भावना से अद्वितीय है। देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने तथा स्वतंत्रता-संग्राम में इनका योगदान अविस्मरणीय है।'[1]

भूषण, तात्या टोपे और बाल गंगाधर तिलक ने भारत की जनता में स्वतंत्रता की मशाल जगायी है। नाटकों का सीधा प्रभाव जनमानस पर हुआ और लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना का नवसंचार हुआ। जनता को स्वयं-शक्ति और सामर्थ्य से अवगत कराया। भ्रष्टाचार और देशद्रोहियों के विरुद्ध आवाज बुलंद किया। इसके संदर्भ में डॉ. लवकुमार लवलीन लिखते हैं, 'भूषण तात्या टोपे और बाल गंगाधर तिलक के कार्यकलापों एवं जनसेवी कार्यों को उद्घाटित करने के लिए 'चंद्र' ने नई संरचनावाली रचनाएँ की हैं। नाटकों के तीनों सिपाही अपनी तरह से अपनी अलग सोच और कार्य पद्धति से संगठन शक्ति और नेतृत्व क्षमता से जन चेतना को उदबुद्ध कर उनमें जागरण का संदेश फूँककर राष्ट्र की अस्मिता और स्वतंत्रता संग्राम में भागीदार होने की विवेक शक्ति उत्पन्न करने में संलग्न दिखाई देते है।'[2]

भूषण एक देशप्रेमी, साहसी और ईमानदार रचनाकार थे। रीतिकाल के अन्य कवियों के समान अलंकारिकता और श्रृगारिकता में कभी नहीं खोए। देश-हित, जनहित उनके रग-रग में समाया हुआ था। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से छत्रसाल और शिवाजी का गुणगान गाते हैं। सत्ता पिपासु राजाओं पर प्रहार करते हैं। जनता को संगठित करते हैं। मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में उपस्थित रहकर चरित्रोद्घाटन करने का साहस भी करते हैं।

नाटककार ने इस प्रसंग का वर्णन इस प्रकार किया है, भूषण राजदरबार में औरंगजेब से कहता है, 'अब तक आप गंदी रचनाएँ सुनते रहे। इसलिए आपके हाथ गंदे हो गए हैं। मैं साफ रचनाएँ सुनाऊँगा और उनको सुनकर आप के हाथ मूँछों पर जाएँगे, इसलिए हाथ धोना जरूरी है।'[3] अतः यह स्पष्ट होता है कि भूषण में देशप्रेमी, स्वाभिमानी, साहसी, निर्भीक आदि गुण कूट-कूट कर भरे थे। नाटक के अन्य एक प्रसंग में भूषण औरंगजेब को सुनाते हैं-

'किबले के और बाप बादशाह साहजहाँ
वाको कैद कियो मानो मक्के.... आगे लाई है।
बड़ो भाई दारा वाको पकरियौ मरि दा डारयो
मेहरहू नाहि माको जायो सगो भाई है
खाई कै कसम मुराद को मनाई लियो.....।'[4]

औरंगजेब के सामने खडे होकर उसकी निंदा करना, मृत्यु को गले लगाने जैसा था। यह कार्य भूषण जैसा राष्ट्रकवि ही कर सकता है। जिन मुस्लिम शासकों ने हिंदुओं के प्रति सद्भावना रखी उनकी प्रशंसा भी भूषण ने की है।

'अमर सेनानी' नाटक तात्या टोपे को केंद्र में रखकर लिखा गया नाटक है, जिससे तात्या टोपे का व्यक्तित्व और कार्य-कुशलता स्पष्ट होती है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तात्या टोपे का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे स्वतंत्रता प्रेमी, महापराक्रमी, शूरवीर, कुशल प्रबंधक और बुद्धिमान विद्रोही थे। हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। देशव्यापी क्रांति के प्रेरणा स्रोत थे। 'अमर सेनानी' नाटक चंद्र जी का यथार्थफरक नाटक है। इसके केंद्र में तात्या टोपे और सन् १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम है। इस स्वतंत्रता संग्राम में तात्या टोपे ने जो क्रांति की मशाल जलाई, वह अंत तक बुझी नहीं। तात्या टोपे अँग्रेजों के खिलाफ हिंदू और मुसलमानों को एक करना चाहते हैं। नाटक के एक प्रसंग में अजीमुल्ला और तात्या टोपे के बीच हुआ वातार्लाप दृष्टव्य है, 'अभी केवल हमें संगठित होना है। विद्रोह हम सब एक साथ करेंगे। अँग्रेजों के पास इतनी शक्ति नहीं है कि वे सभी स्थानों से सेना भेजकर अपनी रक्षा कर सकें। हम अँग्रेजों के क्षेत्र को जीतते हुए, अपनी शक्ति को बढ़ाते जाएँगे। पहले हमारे आक्रमण ऐसे क्षेत्रों पर होंगे, जहाँ अँग्रेजों की शक्ति कमजोर है।'[5]

एकता का अभाव सैनिकों की अनुशासनहीनता आदि के कारण सन् १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम असफल हो जाता है। इसके संदर्भ में तात्या टोपे का मंतव्य दृष्टव्य है, 'हम अपनी असावधानियों के कारण पराजित हुए। सही नेतृत्व का अभाव रहा। अँग्रेजी सेना अनुशासित थी। सेनापति का आदेश ही वहाँ सब कुछ था। अपने सैनिकों में ऐसा अनुशासन नहीं था।'[6]

'नर केशरी' नाटक में क्रांतिकारक बाल गंगाधर तिलक सच्चे देश भक्त, ईमानदार, सेवाभावी वृत्ति वाले, संस्कृति के प्रति लगाव रखनेवाले व्यक्तिमत्व के थे। जनता की खुशहाली के लिए देश का स्वतंत्र होना जरूरी है, ऐसा उनका मानना था। वे कहते हैं कि परतंत्रता के कारण जनता ने आत्मविश्वास खो दिया है। इसके लिए स्वाभिमान और राष्ट्रनिष्ठा का होना बेहद जरूरी है। नाटक के एक प्रसंग मे आगरकर और बाल गंगाधर तिलक के बीच हुए वातार्लाप से यह बात स्पष्ट होती है। तिलक आगरकर से कहते हैं, 'मैं सीधे टकराने की बात कहाँ करता हूँ? मैं तो संविधानिक नीति सामने रखता हूँ कि जनता डरी हुई है। उसमें हमें स्वाभिमान और राष्ट्रप्रेम का भाव जगाना होगा।'[7]

नाटक के एक प्रसंग में अँग्रेजों के 'तोड़ो और राजनीति करो' इस नीति के शिकार हिंदू और मुसलमान आपस में लड़ रहे थे। दंगे फसाद हो रहे थे। इस स्थिति से तिलक काफी चिंतित थे। वे समाज-सुधारक परांजपे से कहते हैं, 'हिंदू और मुसलमानों को सोचना चाहिए। उन्हें एक दूसरे के धर्म पर प्रहार नहीं करना चाहिए। न हिंदू ही कोई ऐसा कार्य करे, जो मुसलमानों को व्यथित करे और न मुसलमान ही हिंदू धर्म के खिलाफ कोई विरोध का काम करें। हवा का रुख देखकर सरकार अब मुसलमानों का पक्ष लेने लगी है।'[8]

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना हजारों सालों से देखी जाती है। आदिकाल के चारण कवियों ने राष्ट्रीयता से ओतप्रोत अनेक रचनाएँ हिंदी साहित्य को प्रदान की हैं। आधुनिकाल तक आते-आते राष्ट्रीयता की भावना अधिक प्रकाश मान हुई। इसमें सभी विधाओं का बोलबाला रहा। नाटक विधा के विकास में साठोत्तरी नाटककारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के नाटकों में इतिहास, देशप्रेम, राष्ट्रीयता आदि बातों का चित्रण हुआ है। 'भूषण भनत', 'अमर सेनानी' और 'नरकेसरी' आदि नाटकों में रीतिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इन तीन सिपाहियों ने अपनी सीमाओं, शक्तियों और देशभक्ति की उत्कट भावना से जनता को जागृत कर स्वतंत्रता और संगठित होने की प्रेरणा दी है।

संदर्भ :

1. डॉ. लव कुमार लवलीन, डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' की रंग यात्रा विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम सं २०१२, पृष्ठ, १८६
2. वही, पृष्ठ, १८७
3. सुरेश शुक्ल 'चंद्र', 'वतन के तीन सिपाही', अनंग प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१०, पृष्ठ, २९
4. वही, पृष्ठ, ३०
5. वही, पृष्ठ, ६४
6. वही, पृष्ठ, ९१
7. वही, पृष्ठ, १८६
8. वही, पृष्ठ, १८७

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)